Title	The Saka of Raisen (1543 AD): Broken Oaths, Night Betrayal, and History's Darkest Revenge
Alternate Title (Hindi)	रायसेन का साका (1543 ई.): कुरान की झूठी कसम, रात का धोखा और इतिहास का सबसे भयानक प्रतिशोध
Author / Researcher	Govind Malviya (REAL HI STORY)
Contact Email	drmalviya0@gmail.com
Date of Publication	August 18, 2026
Subject / Keywords	Raisen Fort; Saka of Raisen; Sher Shah Suri; Raja Puranmal; Rani Ratnavali; Tanwar Rajputs; Tarikh-i-Sher Shahi; Medieval Indian History; Malwa History
Language	Hindi & English (Bilingual Research Document)
Document Type	Historical Monograph / Research Article
License	Creative Commons Attribution-NonCommercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0)

	© 18th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

his document presents a comprehensive, bi-lingual historical analysis of the Siege and Saka of Raisen (1543 AD). It examines the conflict between Sher Shah Suri, founder of the Sur Empire, and Raja Puranmal Tanwar of Raisen. Grounded primarily in contemporary Persian chronicles—most notably Abbas Khan Sarwani's *'Tarikh-i-Sher Shahi'* and Abdul Qadir Badayuni's records—this treatise explores the military impasse, the reliance on sacred oaths, the political application of clerical fatwas, and the tragic aftermath involving mass martyrdom, captivity, and human rights violations in medieval siege warfare.

रायसेन का साका (1543 ई.) – धोखे और खून से लिखा इतिहास

प्रामाणिकता एवं स्रोत (Source Authenticity)

अस्वीकरण: प्रस्तुत शोध आलेख पूर्णतः प्राथमिक एवं प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोतों, जैसे अफगान इतिहासकार अब्बास खान सरवानी द्वारा रचित *'तारीख-ए-शेरशाही'* एवं समकालीन फारसी दस्तावेजों पर आधारित है। इसका उद्देश्य ऐतिहासिक तथ्यों, रणनीतिक निर्णयों और युद्धकालीन घटनाओं का निष्पक्ष विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

1. प्रस्तावना: इतिहास का वह काला पन्ना

इतिहास प्रायः विजेताओं की गाथा गाता है, लेकिन कुछ घटनाएँ इतनी खौफनाक और कलंकित होती हैं कि उन्हें काल की गर्त में छुपाना असंभव हो जाता है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास में **1543 ईस्वी का रायसेन का साका** एक ऐसा ही अध्याय है। यह केवल दो सेनाओं के बीच लड़ा गया साधारण युद्ध नहीं था, बल्कि यह साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा, पवित्र ग्रंथ की झूठी कसम, धार्मिक फतवे और राजपूतों के अभूतपूर्व आत्म-बलिदान का एक महासंग्राम था।

2. रायसेन की भौगोलिक महत्ता और तंवर राजवंश

मध्य प्रदेश के वर्तमान रायसेन जिले में विंध्याचल पर्वत श्रृंखला की एक विशाल पहाड़ी पर स्थित रायसेन का किला मध्य भारत (मालवा) का सबसे सुदृढ़ और रणनीतिक केंद्र माना जाता था। यह किला भोपाल और मालवा के व्यापारिक तथा सैन्य मार्गों पर पूर्ण नियंत्रण रखता था।

- **राजा पूरणमल का शासन:** उस समय रायसेन पर **तंवर (तोमर) राजपूत राजा पूरणमल** का शासन था। पूरणमल ग्वालियर के प्रसिद्ध तोमर राजवंश (राजा मानसिंह तोमर के परिवार) से संबंध रखते थे। ये वही तोमर राजपूत थे जिन्होंने 1527 में खानवा के युद्ध में राणा सांगा का साथ दिया था और बाद में रामशाह तोमर के रूप में महाराणा प्रताप के साथ हल्दीघाटी में वीरगति पाई थी।
- **अजेय दुर्ग:** रायसेन का किला अपनी बनावट, विशाल प्राचीरों और आंतरिक जल-संरक्षण प्रणालियों के कारण तत्कालीन समय में लगभग 'अजेय' माना जाता था।

3. शेरशाह सूरी की हताशा और तांबे की तोपें

1540 में हुमायूं को हराकर दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाले शेरशाह सूरी ने पूरे उत्तरी भारत पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था। मालवा पर पूर्ण नियंत्रण के लिए रायसेन को जीतना शेरशाह के लिए नाक का सवाल बन गया था। 1543 में शेरशाह ने एक विशाल अफगान सेना के साथ रायसेन को घेर लिया।

- **महीनों की घेराबंदी:** पूरणमल के पास केवल 4,000 से 6,000 समर्पित राजपूत सैनिक थे, जबकि शेरशाह के पास 50,000 से अधिक की विशाल सेना और तोपखाना था। इसके बावजूद, महीनों बीत जाने पर भी अफगान सेना किले की एक ईंट तक नहीं हिला सकी।
- **सिक्के और बर्तन पिघलाए गए:** जब सामान्य गोलाबारी विफल रही, तो शेरशाह ने अपनी छावनी के तांबे के सारे बर्तन, और यहाँ तक कि टकसाल में ढले तांबे के सिक्के (दाम) भी पिघलाने का आदेश दिया। इनसे भारी तोपें (Mortars) ढाली गईं। लेकिन रायसेन की चट्टानी दीवारों और राजपूतों के साहस के आगे सब बेकार साबित हुआ।

4. कुरान की झूठी कसम और विश्वासघात का जाल

जब सैन्य बल, तोपें और घेराबंदी विफल हो गई, तो शेरशाह ने समझ लिया कि रायसेन को वीरता से नहीं जीता जा सकता। उसने वह मार्ग चुना जो राजपूतों की कूटनीतिक सोच से परे था–धार्मिक कसम का सहारा।

- **कुतुब खान की मध्यस्थता:** शेरशाह ने अपने सबसे वफादार, सम्मानित और धर्मनिष्ठ अफगान सरदार **कुतुब खान नायब** को पूरणमल के पास बातचीत के लिए भेजा।

- **पवित्र ग्रंथ पर सौगंध:** कुतुब खान ने **पवित्र कुरान पर हाथ रखकर** यह शपथ ली कि यदि पूरणमल किला खाली कर देते हैं, तो उन्हें, उनके परिवार, खजाने और राजपूत सैनिकों को पूर्ण सुरक्षा के साथ सुरक्षित बाहर जाने दिया जाएगा।
- **किले का समर्पण:** पूरणमल ने एक सम्मानित अफगान सरदार द्वारा कुरान पर खाई गई कसम पर पूर्ण विश्वास कर लिया। उन्होंने किला खाली कर दिया और अपने परिवार व सैनिकों के साथ किले के नीचे तलहटी में स्थित एक शिविर (Camp) में डेरा डाल दिया।

5. चंदेरी की विधवाएँ और उलेमाओं का 'फतवा'

शेरशाह कसम तोड़कर पूरणमल का सफाया करना चाहता था, लेकिन उसे अपने ही अफगान सरदारों और कुतुब खान के नैतिक विरोध का डर था। इसलिए उसने एक घिनौना राजनीतिक और धार्मिक नाटक रचा:

- **चंदेरी का प्रसंग:** शेरशाह ने पास के क्षेत्र चंदेरी की कुछ मुस्लिम महिलाओं को अपने दरबार में बुलवाया। इन महिलाओं ने आरोप लगाया कि जब पूरणमल का चंदेरी पर प्रभाव था, तब उनके पतियों को मारा गया और मुस्लिम महिलाओं को प्रताड़ित किया गया।
- **शेख खलील का फतवा:** शेरशाह ने इस शिकायत को आधार बनाकर अपने मुख्य शाही सलाहकार और धर्मगुरु **शेख खलील** से परामर्श माँगा। शेख खलील और अन्य उलेमाओं ने शेरशाह की मनमाफिक इच्छा पूरी करते हुए फतवा जारी किया:

  > *"चूंकि काफिर (पूरणमल) ने अतीत में मुसलमानों पर अत्याचार किए हैं, इसलिए उसके साथ खाई गई कसम को तोड़ना धर्म के विरुद्ध नहीं है, बल्कि उसे नष्ट करना एक पुण्य का कार्य है।"*

इस प्रकार, एक नीच कूटनीतिक धोखे को धार्मिक और नैतिक स्वीकृति का जामा पहना दिया गया।

6. महाभयंकर रात: रानी रत्नावली का वध और जौहर

फतवा मिलते ही शेरशाह ने सुबह होने से ठीक पहले (रात के अंधेरे में) अपनी विशाल अफगान सेना को निहत्थे और सोते हुए राजपूत शिविर को चारों तरफ से घेरने का हुक्म दिया।

- **रानी रत्नावली का बलिदान:** अचानक हुए इस हमले से जब शिविर में कोहराम मचा, तो राजा पूरणमल को तुरंत अहसास हो गया कि उनके साथ छलावा हुआ है। अफगानों के हाथ अपनी स्त्रियों का सम्मान न जाने देने के लिए पूरणमल सीधे अपनी सबसे प्रिय पत्नी **रानी रत्नावली** के तंबू में गए। अब्बास खान सरवानी लिखता है कि पूरणमल ने बिना एक शब्द कहे अपनी ही तलवार से रानी रत्नावली का शीश धड़ से अलग कर दिया।
- **सामूहिक जौहर और नरसंहार:** रानी रत्नावली के बलिदान को देखते ही पूरे शिविर में आग की तरह संदेश फैल गया। भाइयों, पिताओं और पतियों ने अपने ही हाथों से अपनी बहनों, बेटियों और पत्नियों का वध कर दिया ताकि वे अफगानों की वासना का शिकार न बनें। चीखों और खून से पूरी घाटी कांप उठी।

7. राजपूतों का आत्मघाती हमला (Suicidal Charge)

अपनी आँखों के सामने अपने परिवारों का वध करने के बाद बचे हुए मुट्ठी भर राजपूत सैनिकों के मन से मौत का खौफ खत्म हो चुका था। उन्होंने अपने प्राणों की भीख माँगने के बजाय अपनी तलवारें उठाईं और अफगान सेना की विशाल पंक्तियों पर टूट पड़े।

- **अब्बास खान सरवानी का विवरण:** सरवानी लिखता है कि:

  > *"राजपूत सूअरों की तरह नहीं, बल्कि भूखे शेरों की तरह लड़े। उन्होंने मौत को गले लगा लिया और अफगान सेना में ऐसी तबाही मचाई कि दुश्मनों की रूह कांप गई।"*

- **एक भी जीवित नहीं बचा:** निहत्थे और संख्या में कम होने के बावजूद राजपूतों ने सैकड़ों अफगानों को मौत के घाट उतार दिया। अंततः, उस खौफनाक रात शिविर में मौजूद एक भी राजपूत योद्धा जीवित नहीं बचा।

8. क्रूरता की पराकाष्ठा: मासूम बच्चों के साथ अमानवीय हश्र

युद्ध के मैदान में राजपूतों का खात्मा करने के बाद भी शेरशाह का प्रतिशोध शांत नहीं हुआ। इस भीषण कत्लेआम और अफरा-तफरी में पूरणमल की एक छोटी बच्ची और तीन छोटे भतीजे जीवित बच गए थे जिन्हें बंदी बना लिया गया। शेरशाह ने उनके साथ जो किया, वह मानवीय इतिहास के सबसे क्रूर निर्णयों में से एक है:

- **मासूम बेटी का हश्र:** पूरणमल की मासूम बेटी को शेरशाह ने सड़क के **नटों, बाजीगरों और गवैयों (Minstrels/Street Dancers)** को सौंप दिया। इसका उद्देश्य यह था कि एक गौरवशाली तोमर राजवंश की बेटी का पालन-पोषण बाजारों में एक नर्तकी के रूप में हो, ताकि उसके वंश के आत्म-सम्मान को हमेशा के लिए कुचला जा सके।
- **भतीजों का नपुंसकीकरण (Castration):** पूरणमल के तीनों छोटे भतीजों को शेरशाह के आदेश पर **नपुंसक** बना दिया गया। इसका सीधा रणनीतिक उद्देश्य यह था कि तोमर वंश का रक्त और उत्तराधिकार यहीं समाप्त हो जाए और भविष्य में कोई भी इस धोखे का बदला लेने के लिए पैदा न हो सके।

9. परिणाम और कुतुब खान की आत्मग्लानि

- **कुतुब खान का मानसिक अंत:** जिस अफगान सरदार कुतुब खान ने कुरान पर हाथ रखकर कसम खाई थी, वह इस घिनौने विश्वासघात और कत्लेआम को देखकर अंदर से पूरी तरह टूट गया। उसे अपने ही धर्म के नाम पर किए गए इस छल से इतनी गहरी **आत्मग्लानि (Guilt)** हुई कि उसने खुद को शाही दरबार और सैन्य जीवन से पूरी तरह अलग कर लिया। वह इसी मानसिक आघात और पीड़ा में घुट-घुट कर असमय मृत्यु को प्राप्त हुआ।
- **इतिहास का काला धब्बा:** शेरशाह सूरी को भारतीय इतिहास में उसके बेहतरीन प्रशासनिक सुधारों, भू-राजस्व व्यवस्था (रैयतवाड़ी) और 'सड़क-ए-आज़म' (Grand Trunk Road) के निर्माण के लिए एक महान शासक के रूप में पढ़ाया जाता है। परंतु, **रायसेन का यह साका और यह कूटनीतिक धोखा उसके चरित्र और पूरे शासनकाल पर लगा एक ऐसा अमिट और काला धब्बा (Darkest Blot) है जिसे इतिहास कभी माफ नहीं कर सकता।**

The Saka of Raisen (1543 AD) — Broken Oaths, Night Betrayal, and History's Darkest Revenge

1. The Darkest Chapter of Medieval India

History is overwhelmingly written by the victors, but certain acts of treachery and horrors are so profound that no amount of royal patronage or revisionism can erase them. The **Saka of Raisen in 1543 AD** stands as one of the darkest and most treacherous chapters in medieval Indian history. It was not merely a military engagement between two opposing armies, but a tragic saga defined by imperial ambition, broken sacred oaths, religious decrees, and unmatched Rajput martyrdom.

This account is verified directly from primary Persian historical chronicles, most notably **'Tarikh-i-Sher Shahi'** written by Sher Shah Suri's own court chronicler, **Abbas Khan Sarwani**, as well as records by contemporary historian Abdul Qadir Badayuni.

2. Strategic Importance of Raisen and the Tomar Lineage

Perched atop a massive hill in the Vindhya range near present-day Bhopal in Madhya Pradesh, the Raisen Fort was a formidable stronghold. It held immense strategic importance, commanding the primary trade and military routes across Malwa and Central India.

- **Raja Puranmal's Reign:** At the time, Raisen was ruled by **Raja Puranmal**, a Tanwar (Tomar) Rajput ruler. Puranmal belonged to the illustrious Tomar dynasty of Gwalior (the lineage of Raja Man Singh Tomar). This was the very same clan that fought alongside Rana Sanga at Khanwa in 1527 and later sacrificed their lives alongside Maharana Pratap at Haldighati under Ramshah Tomar.
- **An Impregnable Citadel:** Blessed with natural cliff defenses, massive stone ramparts, and advanced rainwater harvesting systems, Raisen was considered virtually impregnable by contemporary military standards.

3. Sher Shah's Frustration and the Copper Cannons

After defeating the Mughal Emperor Humayun in 1540 and establishing the Sur Empire in Delhi, Sher Shah Suri set out to consolidate his hold over Central India. Capturing Raisen became a matter of prestige for him. In 1543, he marched toward Malwa with a massive Afghan army.

- **Months of Futile Siege:** Raja Puranmal defended the fort with a modest force of roughly 4,000 to 6,000 dedicated Rajput warriors. Against them was Sher Shah's imperial army exceeding 50,000 troops equipped with siege engines. Despite months of encirclement, the Afghan forces could not breach the fort walls.
- **Melting Coins for Artillery:** In sheer desperation, Sher Shah ordered all copper cooking vessels in his military encampment—and even copper coins (*dams*) from the royal treasury—to be melted down to cast massive siege mortars. Yet, the stubborn resistance of the Rajputs and the fort's rocky terrain rendered the artillery ineffective.

4. The Oath on the Holy Quran and the Deceitful Trap

Realizing that Raisen could never be conquered through honorable combat, Sher Shah turned to tactical deceit—a strategy that exploited the honorable code of the Rajputs.

- **Qutub Khan's Mediation:** Sher Shah dispatched his most trusted, respected, and devout general, **Qutub Khan Nayab**, to open negotiations with Raja Puranmal.
- **Sacred Pledge:** Placing his hand upon the **Holy Quran**, Qutub Khan swore a solemn oath that if Puranmal agreed to evacuate the fort, he, his family, his treasury, and his soldiers would be granted safe passage without any harm.

- **Surrender of the Fort:** Relying implicitly on a solemn oath sworn upon the holy book by a senior Afghan noble, Puranmal evacuated Raisen Fort. He established an encampment at the foothills with his family and soldiers.

5. The Grievances of Chanderi and the Clerical 'Fatwa'

Sher Shah intended to break the truce and eliminate Puranmal, but he feared a moral backlash from his own Afghan commanders and Qutub Khan. To bypass this ethical barrier, a political and religious theater was orchestrated:

- **The Incident of Chanderi:** Sher Shah summoned a delegation of Muslim women from nearby Chanderi. These women claimed that during Puranmal's prior influence over the region, their husbands had been killed and Muslim women mistreated.
- **Sheikh Khalil's Fatwa:** Using these allegations as a pretext, Sher Shah consulted his chief royal cleric, **Sheikh Khalil**. The cleric, aligning with the Emperor's unspoken desire, issued an official religious decree (*Fatwa*):

  > *"Since the infidel (Puranmal) has committed atrocities against Muslims in the past, breaking an oath made with him is not a sin; rather, his destruction is a righteous act."*

Through this decree, a dishonorable betrayal was granted official religious and moral sanction.

6. A Night of Terror: The Execution of Rani Ratnavali and Jauhar

Armed with the decree, Sher Shah ordered his massive Afghan army to silently surround the unsuspecting, sleeping Rajput camp in the dark hours before dawn.

- **Rani Ratnavali's Sacrifice:** As the Afghan forces attacked, panic erupted. Realizing the betrayal, Raja Puranmal knew there was no escape. To save his family from dishonor and captivity, he rushed straight to the tent of his beloved wife, **Rani Ratnavali**. Abbas Khan Sarwani records that without uttering a single word, Puranmal drew his sword and decapitated Rani Ratnavali.
- **Mass Jauhar and Slaughter:** Seeing their king's action, a wave of horrific self-sacrifice swept through the camp. Fathers, brothers, and husbands personally executed their wives, sisters, and children to protect them from falling into enemy hands. The valley echoed with cries as families destroyed themselves to preserve their dignity.

7. The Rajputs' Suicidal Charge

With their families dead by their own hands, the remaining handful of Rajput warriors lost all fear of death. Stripped of armor and outnumbered fifty to one, they drew their swords for an ultimate, desperate stand.

- **Sarwani's Account:** The Afghan chronicler Sarwani recorded in awe:

> *"The Rajputs fought not like men, but like hungry lions. They threw themselves into the Afghan ranks, preferring death over surrender, inflicting massive casualties upon the imperial army."*

- **No Survivors:** Despite fighting valiantly and slaying hundreds of Afghan soldiers, every single Rajput warrior in the camp was killed that night.

8. The Height of Cruelty: Fate of the Surviving Children

The tragedy did not end on the blood-soaked battlefield. Puranmal's infant daughter and three young nephews survived the initial massacre and were captured by Afghan forces. Sher Shah's retribution against these helpless children remains one of the most inhumane acts recorded in medieval history:

- **Fate of the Daughter:** Sher Shah handed Puranmal's young daughter over to **itinerant minstrels and street performers (Gawans/Bazaar Dancers)**. His explicit objective was to ensure that a daughter of the royal Tomar lineage was raised as a public performer, attempting to permanently humiliate the dignity of her house.
- **Castration of the Nephews:** Sher Shah ordered the three young nephews of Puranmal to be **castrated**. The strategic intent was to eradicate the bloodline of the Tomars of Raisen, ensuring that no legitimate male heir would ever rise to avenge the betrayal.

9. Aftermath and the Guilt of Qutub Khan

- **The Remorse of Qutub Khan:** Qutub Khan, the noble who had sworn the sacred oath on the Quran, was completely devastated by the dishonorable slaughter. Consumed by profound **remorse and guilt** for having been used as an instrument of deceit, he withdrew entirely from public and military life, eventually dying in shame and despair.
- **An Indelible Stain on History:** Sher Shah Suri is widely remembered in Indian history for his administrative genius, revenue systems (*Ryotwari*), and the construction of the Grand Trunk Road (*Sadak-e-Azam*). However, **the Saka of Raisen remains the darkest and most indelible blot on his character and reign—a chilling reminder of how sacred oaths and ethics were destroyed for political dominance.**

Parameters / घटक	**Raja Puranmal (Tanwar Dynasty)**	**Sher Shah Suri (Sur Empire)**
Primary Base	Raisen Fort, Central India (Malwa)	Delhi / Agra (Northern India)

Parameters / घटक	**Raja Puranmal (Tanwar Dynasty)**	**Sher Shah Suri (Sur Empire)**
Troop Strength	~4,000 – 6,000 Rajput Warriors	~50,000+ Imperial Afghan Army with heavy artillery
Key Military Strategy	Defensive Siege Holdout, Fortified Positioning	Siege Mortars, Economic Blockade, Diplomatic Trickery
Primary Historical Sources	*Tarikh-i-Sher Shahi* (Abbas Khan Sarwani), *Muntakhab-ut-Tawarikh* (Badauni)	*Tarikh-i-Sher Shahi* (Abbas Khan Sarwani)
Historical Outcome	Total Sacrifice (Saka), Destruction of Dynasty Lineage	Tactical Victory, Permanent Moral and Historical Stigma